|| जय श्री माधब ||

BISWA SANATAN DHARMA SEVA TRUST
PATH TO A NEW WORLD
BHARAT

विश्व सनातन धर्म

त्रिकाल संध्या

भगवान कल्कि राम श्री श्री श्री सत्य अनंत माधब
को प्राप्त करने के लिए दिए हुए
पांच महान वाणियों का पालन करें :-

१. बात मानना सीखिए
२. प्रतीक्षा करना सीखिए
३. प्रेम करना सीखिए
४. उपवास करना सीखिए
५. मैं, मेरा, तू, तेरा के भाव को छोड़िये

संपर्क सूत्र: भाई +91 88824 86287
माँ +91 87662 53647

अनुक्रमणिका

(क्रम-सूची)

卐 सत्संग 1

卐 मंत्र एवं स्तोत्र .... 2 - 7

1. श्री विष्णोः षोडशनामस्तोत्रम् 2

2. श्रीदशावतार स्तोत्रम् 3–4

3. दुर्गा-माधब स्तुति 5

4. माधव-माधव गीत 6

5. कल्कि महामंत्र 7

ॐ

सत्संग

1. ['ॐ '] उच्चारण *३बार

2. [*ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं ।*
भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्]॥ *३ बार

1. श्री विष्णोः षोडशनाम स्तोत्रम्

(श्री विष्णु जी के सोलह नाम)

औषधे चिन्तयेत् विष्णुं ॥१॥
भोजने च जनार्दनम् ॥२॥
शयने पद्मनाभं च ॥३॥
विवाहे च प्रजापतिम् ॥४॥
युद्धे चक्रधरं देवं ॥५॥
प्रवासे च त्रिविक्रमम् ॥६॥
नारायणं तनुत्यागे ॥७॥
श्रीधरं प्रियसंगमे ॥८॥
दुःस्वप्ने स्मर गोविन्दं॥९॥
संकटे मधुसूदनम् ॥१०॥
कानने नारसिंहं च ॥११॥
पावके जलशायिनम्॥१२॥
जलमध्ये वराहं च ॥१३॥
गमने वामनम् चैव ॥१४॥
पर्वते रघुनन्दनं ॥१५॥
[सर्व कार्येशु माधवम्]॥१६॥ *३ बार

षोडशैतानि नामानि प्रातरुत्थाय यः पठेत्
सर्वपाप विनिर्मुक्तो विष्णुलोके महीयते ॥

2. श्रीदशावतारस्तोत्रम्

(श्री जयदेव जी द्वारा रचित दश अवतार स्तोत्र)

प्रलय पयोधि-जले धतृवान् असि वेदम् ।
विहित वहित्र-चरित्रम अखेदम् ॥
केशव धृत-मीन-शरीर जय जगदीश हरे ॥१॥

क्षितिरति-विपुलतरे तव तिष्ठति पृष्ठे ।
धरणि-धरण-किण चक्र-गरिष्ठे ॥
केशव धृत-कच्छप-रूप जय जगदीश हरे ॥२॥

वसति दशन-शिखरे धरणी तव लग्ना ।
शशिनि कलंक-कलेव निमग्ना ॥
केशव धृत-शूकर-रूप जय जगदीश हरे ॥३॥

तव कर-कमल-वरे नखम्-अद्भुत-शृंगम् ।
दलित-हिरण्यकशिपु-तनु-भृंगम् ॥
केशव धृत-नरहरि-रूप जय जगदीश हरे ॥४॥

छलयसि विक्रमणे बलिम्-अद्भुत-वामन ।
पद-नख-नीर-जनित-जन-पावन ॥
केशव धृत-वामन-रूप जय जगदीश हरे ॥५॥

क्षत्रिय-रुधिर-मये जगद्-अपगत-पापम् ।
स्नपयसि पयसि शमित-भव-तापम् ॥
केशव धृत-भृगुपति-रूप जय जगदीश हरे ॥६॥

क्रम-सूची-↑

2. श्रीदशावतारस्तोत्रम्

(द्वितीय पृष्ठ)

वितरसि दिक्षु रणे दिक्-पति-कमनीयम् ।
दश-मुख-मौलि-बलिम् रमणीयम् ॥
केशव धृत-रघुपति-रूप जय जगदीश हरे ॥७॥

वहसि वपुषि विशदे वसनम् जलदाभम् ।
हल-हति-भीति-मिलित-यमुनाभम् ॥
केशव धृत-हलधर-रूप जय जगदीश हरे ॥८॥

निन्दसि यज्ञ-विधेर् अहह श्रुति जातम् ।
सदय-हृदय-दर्शित-पशु-घातम् ॥
केशव धृत-बुद्ध-शरीर जय जगदीश हरे ॥९॥

म्लेच्छ-निवह-निधने कलयसि करवालम् ।
धूमकेतुम्-इव किम्-अपि करालम् ॥
केशव धृत-कल्कि-शरीर जय जगदीश हरे ॥१०॥

श्री-जयदेव-कवेर्-इदम्-उदितम्-उदारम् ।
शृणु सुख-दम् शुभ-दम् भव-सारम् ॥
केशव धृत-दश-विध-रूप जय जगदीश हरे ॥११॥

3. दुर्गा - माधब स्तुति

(दुर्गा - माधब स्तुति पाठ)

जय हे ! दुर्गा माधब कृपामय कृपामयी।
दुर्गान्कु सेबी माधब होइले मो दीअं साईं ॥०॥ जय हे ...

बहू रुपे जय दुर्गे, ब्यापी अछु सर्ब ठाबे ।
रमा उमा बाणी राधा तो छड़ा अन्य के नाहिं॥१॥ जय हे ...

मदन मोहन रुपे ब्यापी अछु सर्ब ठाबे ।
मोहन चित्त मोहिलू श्री सर्ब मंगला तुही॥२॥ जय हे ...

धर्म संस्थापने जन्म यदी हवन्ति नारायण।
दुर्गान्कु छाड़ी माधब खेलि बार शक्ति काहिं॥३॥ जय हे ...

माधबन्क खेल पाइं देह धरू महामायी।
माधबन्कु पति पुत्र रुपे खेलाउछु तुही॥४॥ जय हे ...

माधबन्कु दुर्गा कोले जेहुं देखे बेनी डोले।
ताहार भाग्यर कथा ब्रह्मा शिबे न जोगाई॥५॥ जय हे ...

जय दुर्गति नाशिनी अभिरामर जननी।
शुभागमन करंतू माधब न्कु कोले नेई॥६॥ जय हे ...

4. माधब-माधब गीत

(अनंतयुग का एक नाम)

माधब माधब माधब ॥
श्री सत्य अनंत माधब ॥१॥

श्री सत्य अनंत माधब ॥
श्री सत्य अनंत माधब ॥२॥

माधब माधब माधब ॥
ओ३म् सत्य अनतं माधब ॥३॥

ओ३म् सत्य अनतं माधब ॥
ओ३म् सत्य अनतं माधब ॥४॥

माधब माधब माधब ॥
श्री सत्य अनंत माधब ॥५॥

श्री सत्य अनंत माधब ॥
श्री सत्य अनंत माधब ॥६॥

माधब माधब माधब ॥
श्री सत्य अनंत माधब ॥७॥

5. कल्कि महामंत्र

(अनंतयुग का कल्कि महामंत्र)

राम हरे कृष्ण हरे, राम हरे कृष्ण हरे ॥
राम हरे कृष्ण हरे, अनंत माधब हरे ॥१॥

राम हरे कृष्ण हरे, राम हरे कृष्ण हरे ॥
राम हरे कृष्ण हरे, अनंत माधब हरे ॥२॥

राम हरे कृष्ण हरे, राम हरे कृष्ण हरे ॥
राम हरे कृष्ण हरे, अनंत माधब हरे ॥३॥

राम हरे कृष्ण हरे, राम हरे कृष्ण हरे ॥
राम हरे कृष्ण हरे, अनंत माधब हरे ॥४॥

राम हरे कृष्ण हरे, राम हरे कृष्ण हरे ॥
राम हरे कृष्ण हरे, अनंत माधब हरे ॥५॥

राम हरे कृष्ण हरे, राम हरे कृष्ण हरे ॥
राम हरे कृष्ण हरे, अनंत माधब हरे ॥६॥

राम हरे कृष्ण हरे, राम हरे कृष्ण हरे ॥
राम हरे कृष्ण हरे, अनंत माधब हरे ॥७॥